मोमिन कौन होता है?

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची

मोमिन का लफ़्ज़ हम बराबर सुनते और बोलते रहते हैं लेकिन साथ ही हमें इस पर ग़ौर भी करना चाहिए कि मोमिन किसको कहते हैं। क्या मोमिन बनने के लिए सिर्फ़ ज़बान से ख़ुदा और रसूल और इमाम, क़यामत और दूसरी ज़रूरी बातों का इक़रार कर लेना काफ़ी है या इस ज़बानी इक़रार के साथ कोई और शर्त भी है तो हम ये देखते हैं कि सिर्फ़ ज़बानी इक़रार कर लेने से आदमी मोमिन नहीं बन सकता। इसके लिए ज़रूरी है कि वह ख़ुदा और रसूल[स०] का सिर्फ़ ज़बान से इक़रार न करे बल्कि सच्चे दिल से उस पर अक़ीदा रखे और ये बात तो तक़रीबन हर शख़्स जानता ही है कि जब कोई दिल से किसी चीज़ को मानता है और उस पर अक़ीदा रखता है तो उसकी पूरी ज़िन्दगी और उसके कहने और करने पर उसका असर पड़ता है इसलिए मोमिन सिर्फ़ उसी शख़्स को कहा जा सकता है जो सच्चे दिल से ख़ुदा और रसूल[स०] की पैरवी करता हो और जो-जो बातें पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने बतायी हैं उनको मानता हो और उसी अक़ीदे के मुताबिक़ उस पर अमल भी हो।

ऐसा न हो कि ज़बान से तो वह ख़ुदा का इक़रार करे, रसूल[स०] का इक़रार करे मगर उसका अमल इस इक़रार के ख़िलाफ़ हो क़ुरआने करीम को ख़ुदा की किताब कहता हो मगर उसकी ज़िन्दगी क़ुरआनी हिदायतों के बिल्कुल ख़िलाफ़ हो। जैसे झूठ बोलता हो, वादा ख़िलाफ़ी करता हो, लोगों को धोका देता हो उनके साथ बुरे अख़लाक़ से पेश आता हो, बड़ों का अदब न करता हो, नमाज़ न पढ़ता हो, रोज़ा न रखता हो, माँ-बाप की इज़्ज़त न करता हो, ग़रीबों को ज़लील समझता हो और दूसरे लोगों को तकलीफ़ पहुँचाता हो, अमानत में हेरफेर करता हो, चारो तरफ़ झगड़ा और फ़साद फैलाता फ़िरता हो, दूसरों का नुक़सान करके अपना भला चाहता हो, पीठ पीछे लोगों की बुराईयाँ यानी ग़ीबत करता हो, दूसरों की अच्छाई न देख सकता हो, दूसरे लोगों से दिल में दुश्मनी और हसद रखता हो, ग़रज़ वह सब करता हो जिसे अल्लाह ने अपने रसूल[स०] और अपनी पाक किताब यानी क़ुरआन करीम के ज़रिये अपने मोमिन बन्दों को बता दिया है फिर ऐसा आदमी किस तरह मोमिन कहे जाने के लायक़ हो सकता है? सरकारे दो आलम[स०] ने अपनी बहुत सी हदीसों में समझा दिया है कि मोमिन कौन हो सकता है?

एक हदीस में आप फ़रमाते हैं "तुम में से कोई भी उस वक़्त तक मोमिन नहीं बन सकता जब तक मेरी मुहब्बत उसको अपने माँ-बाप, अपनी औलाद और सभी लोगों और सभी चीज़ों से ज़्यादा न हो" और ये बात तो हर शख़्स जानता है कि हमें सरकारे दो आलम[स०] से जितनी मुहब्बत होगी उतना ही आपके हुक्म पर अमल करने और आपके रास्ते पर चलने का शौक़ हमारे दिलों में बढ़ेगा।

एक और हदीस में है "मोमिन की निशानी ये है कि उसमें तीन बातें पायी जाएं: एक ये कि उसे अल्लाह और उसका रसूल[स०] सारी दुनिया से ज़्यादा प्यारा हो।

दूसरे ये कि वह जिस से मुहब्बत करे अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिये करे।

और तीसरे ये कि इस्लाम लाने के बाद फिर उसके दिल में कभी इस्लाम की तरफ से शक पैदा न हो और कुफ़्र की तरफ़ लौट जाने को ऐसा ही बुरा समझे जैसे आग के अन्दर गिर जाने को वह कभी पसन्द नहीं करता।

मुख़्तसर ये कि जिस मुसलमान के आमाल अच्छे होंगे और ख़ुदा से डरता होगा और उसकी पैरवी को अपना सबसे बड़ा फ़र्ज़ समझता होगा वही सच्चा मोमिन हो सकता है। सिर्फ़ ज़बान से इक़रार करने वाला हरगिज़ मोमिन नहीं कहा जा सकता।

